वर्ष २०१७ के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश की कलाकृति के दर्शन

आत्मीय साधको,

जैसा कि आप में से बहुत-से लोग जानते हैं कि यह हमारा सद्भाग्य रहा है कि पिछले वर्षों में हमें श्रीगुरुमाई के सन्देश का प्रतीकात्मक स्वरूप प्राप्त होता रहा है। आपको यह बताते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है कि आज से आपको श्रीगुरुमाई के वर्ष २०१७ के सन्देश की कलाकृति के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

श्रीगुरुमाई के वर्ष २०१७ के सन्देश के साथ, हम श्वास-प्रश्वास पर एकाग्रता से अध्ययन करते आ रहे हैं। श्वास-प्रश्वास का रंग क्या है? श्वास-प्रश्वास के विस्तार और उसकी गहराई को कैसे नापा जाता है? श्वास-प्रश्वास का आरम्भ और अन्त कहाँ होता है? प्राण-शक्ति, 'नाद-बिन्दु-कलातीतं' है अर्थात् 'नाद', 'बिन्दु' और 'कला' के परे है; नाद यानी अनाहत नाद, बिन्दु यानी वह बिन्दु जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ है और कला यानी विश्व का प्राकट्य। 'नाद-बिन्दु-कलातीतं' — यह व्याख्या श्रीगुरुगीता में आत्मा का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त की गई है — और प्राण-शक्ति आत्मा का सार है।

मुझे यह देखना हमेशा अच्छा लगता है कि किस प्रकार एक कलाकार उसे देखता है जो सभी के परे है। ऐसी कृति मेरे अन्दर एक ऐसी अनुभूति जगाती है जिसे मैं कई बार बता नहीं सकती कि यह क्या है — पर यह एक ऐसी अनुभूति होती है जो बहुत गहन, शक्तिशाली और सच्ची होती है। हो सकता है कि शुरू में मेरा मन चित्रकार की तूलिका के घुमाव पर, या प्रकाश और छाया की क्रीडा को चित्रित करने के लिए प्रयोग में लाई गई किसी तकनीक पर, या पृष्ठभूमि में बने किसी ऐसे चिह्न या आकृति के सूक्ष्मतम प्रतिबिम्ब पर केन्द्रित हो। फिर भी, एक क्षण ऐसा आता है जब मैं कैनवस को देख रही होती हूँ और पाती हूँ कि मेरे श्वास ने एक अलग ही विशेषता ग्रहण कर ली है। मैं मात्र देखने के इस यन्त्र अर्थात् अपनी आँखों से देख नहीं रही होती हूँ। मैं पहचान जाती हूँ कि कोई साक्षी है जो मुझमें से देख रहा है।

यह अनुभव अत्यन्त उत्कृष्ट होते हुए भी क्षणिक होता है—हालाँकि कभी-कभी यह बना भी रहता है। जब ऐसा होता है, तो मैं अपने पूरे प्रयत्न से उसे थामे रहना चाहती हूँ, पर यह वैसा ही होगा जैसे मैं अपने हाथों से धुएँ को पकड़ने का प्रयास करूँ।

श्रीगुरुमाई की सन्देश-कलाकृति के विषय में जो अद्‌भुत बात है, वह यह कि मैं एक बार इसे अपनी चेतना में आत्मसात् कर लूँ तो मैं इस चित्र को पुनः-पुनः, पुनः-पुनः अपने मन में ला सकती हूँ। मैं अपने मन में इस चित्र को पुनः देख सकती हूँ और मुझे नए-नए विस्मयजनक उपहार प्राप्त हो सकते हैं। मेरे लिए यह कलाकृति श्रीगुरुमाई के सन्देश का 'साकार रूप' है। यह उसे आकार देती है जो निराकार है।

मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि प्रत्येक बार जब आप इस कलाकृति पर मनन करें तो आप जो भी देखते हैं, उस पर ध्यान दें —चाहे वह आपकी तर्कबुद्धि द्वारा देखा गया हो या आपके हृदय की स्वतःस्फूर्त प्रज्ञा द्वारा। आपको जो अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त हों, उन्हें लिख लें। अपने आप से पूछें : वर्ष २०१७ के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश के अध्ययन में इस कलाकृति के विभिन्न तत्त्वों का मेरे लिए क्या अर्थ है, जैसे इसके आकार, रंग, बनावट का? इस कलाकृति का मेरा अध्ययन श्रीगुरुमाई के सन्देश के विषय में मेरी समझ को किस प्रकार दृढ़ बनाता है? श्रीगुरुमाई की सन्देश-कलाकृति किस प्रकार मुझे 'साकार रूप' से 'निराकार रूप' की ओर ले जाती है? उत्सुकता और जिज्ञासा के साथ स्वयं से पूछें : मुझे क्या प्राप्त होने वाला है?

जब आप पहली बार श्रीगुरुमाई की सन्देश-कलाकृति को ग्रहण करने के लिए स्वयं को तैयार करें, तो मेरा सुझाव है कि आप कम से कम १५ मिनट निकालें और नीचे जो बिन्दु दिए गए हैं, उनका पालन करें :

- प्रथम, श्रीगुरुमाई की सन्देश-कलाकृति के साथ बने रहें।
- उसके बाद, ध्यान करें।
- तत्पश्चात्, यदि आपके पास अतिरिक्त समय हो तो आप अपने जर्नल में लिख सकते हैं।

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई
सिद्धयोग विद्यार्थी

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।